Gyanshauryam, International Scientific Refereed Research Journal
© 2020 GISRRJ | Volume 3 | Issue 4 | ISSN : 2582-0095

किरातार्जुनीय और शिशुपाल की संक्षिप्त कथा : एक अध्ययन

डॉ0 ज्योति
एम.ए., पीएच.डी. (संस्कृत)
बी.आर.ए. बिहार विश्वविद्यालय, मुजफ्फरपुर (बिहार)

महाराज युधिष्ठिर जूये में हार जाने से भीम, अर्जुन, नकुल, सहदेव तथा द्रौपदी के साथ द्वैतवन नामक जङ्गल में निवास करते थे, उस समय उन्होंने दुर्योधन का समाचार जानने के लिये एक वनवासी (किरात–वनेचर) को ब्रह्मचारी के वेष में भेजा था, वह सब हाल जानकर महाराज युधिष्ठिर के पास आया और कहने लगा– हे महाराज दुर्योधन इस समय राज्य का नीतिपूर्वक शासन कर रहा है, 'मै राजा हूँ मेरा यही धर्म है' ऐसा समझता हुआ शत्रु या पुत्र जो हो उसे धर्मशास्त्रानुसार दण्ड देता है। उसके यहाँ बड़े–बड़े राजा लोग आकर दरवार में कर देते हैं तथा जो आदेश करता है उसे सब पूरा करते हैं, उसके राज्य में सर्वत्र कृषि उत्तम रूप से होती है, और प्रजा प्रसन्नता से समय–समय पर कर देती है। वह दुःशास को युवराज बनाकर स्वयं यज्ञादि करता रहता है, इसलिये अब आप उसे जीतने के लिये कोई प्रबल उपाय करें। इसके बाद युधिष्ठिर महाराज के उसे पारितोषिक देकर विदा करके उक्त समाचार भीमादि के सामने द्रौपदी के जाकर कहा, उसे सुनकर द्रौपदी ने कहा–

हे नाथ! यद्यपि स्त्री का उपदेश पुरूषों के लिये अनादर सा होता है तथापि क्या करूँ मेरी आन्तरिक व्यथा मुझे कहने के लिये बाध्य कर रही है अतः आप क्षमा करियेगा। हे महाराज! भला बताइये तो आपके सिवाय कौन ऐसा राजा होगा जो अपनी स्त्री के समान राजलक्ष्मी को दूसरे के अधीन कर देगा। हा! देखिये ये वही भीम हैं जो पहले सुन्दर पलङ्ग पर सोते थे आज जमीन पर सोते हैं, और जिन्होंने उत्तर कुरू देश को जीतकर बहुत सा स्वर्ण लाकर खजाने

में रखा था वे ही अर्जुन आज वल्कल पहने हुए हैं और ये दोनों सुकुमार सुन्दर नकुल तथा सहदेव कठिन भूमि में सोते हैं। इन सबों को इन हालतों में देखकर भी आप धैर्य और सन्तोष को नहीं छोड़ते हैं यह बड़े आश्चर्य की बात है, आपकी दुर्दशा देखकर मुझे तो अत्यन्त दुःख हो रहा है।

हे महाराज! आप अब शान्ति को छोड़कर शत्रुओं को नष्ट करने के लिये अपना पुराना तेज धारण करिये, क्योंकि शान्ति से मुनियों का कार्य होता है न कि राजाओं का, यदि आप शान्ति ही को सुख का साधन समझते हैं तो राज–चिन्ह धनुषादि को त्यागकर जटा बढ़ाकर केवल मुनियों की भाँति अग्निहोत्र किया करें। हे महाराज! सब प्रकार से समर्थ होते हुए भी शत्रु–विजय के लिये आपका समय की प्रतीक्षा करते रहना उचित नहीं है क्योंकि विजय चाहने वाले राजा लोग समय पड़ने पर किसी न किसी व्याज से सन्धि को भी तोड़ देते हैं।

(अपने मनोनुकूल द्रौपदी की बातें सुनकर भीम युधिष्ठिर से बोले) हे महाराज! द्रौपदी ने इस समय जो कहा वह उचित है। उसकी बात वृहस्पति को भी आश्चर्य में डाल देने वाली हैं। इसे स्त्री की कही हुई समझकर आपको उपेक्षा करना उचित नहीं है, क्योंकि गुणग्राही पुरूष, स्त्री या पुरूष का विचार नहीं करते। बड़े खेद की बात है कि आप देवताओं को भी आश्चर्य में डालनेवाले पुरूषार्थ को पाकर भी दुश्मनी द्वारा दुर्दशा भोग रहे हैं, शत्रु को बढ़ते हुए देखकर भी उसकी उपेक्षा करना अत्यन्त अनुचित है। यद्यपि आप इस समय क्षीण हैं तथापि जब उन्नति के लिये चेष्टा करेंगे तो प्रजा आपके उत्साह को देखकर आपको नमन करेगी, यदि अवधि की प्रतीक्षा करते रहियेगा तो निश्चय समझिये कि दुर्योधन इतने दिन तक राज्यसुख भोगकर आपको अवधि बीतने पर राज्य दे देगा यह असम्भव है। अतः आलस्य छोड़कर पुरूषार्थ करिये, आपको उठते ही शत्रुओं पर विपत्तियाँ आ पड़ेगी। आपके दिग्विजयी चारो भाइयों के तेज को भला शत्रुओं के मध्य में कौन है जो सह सकेगा। इस भाँति अत्यन्त क्रुद्ध भीमसेन की बातें सुनकर मतवाले हाथी की भाँति उन्हें धीरे–धीरे शान्त करने के लिये महाराज युधिष्ठिर चेष्टा करते हुए बोले–

हे भीम! तुमने जो कुछ कहा है, वह सब समयोचित शास्त्र–संगत है तथापि मेरा मन विचारपूर्वक कार्य करने को कहता है। असमय में क्रोध करना अत्यन्त अनुचित है, शान्ति से बढ़कर उत्तम साधन कोई नहीं है, इसके रखने से शत्रु स्वयं नष्ट हो जाते हैं। यदि इस समय नियम तोड़कर चढ़ाई न की जाय तो जितने राजा हैं वे सब अवधि के बाद हमारी सहायता करेंगे। और यह

समझना कि अधिक समय हो जाने पर राजा लोग दुर्योधन के पक्ष में हो जायेंगी तो यह भूल है। अहङ्कारी मनुष्य की सेवा में जो लोग रहते हैं वे लोग जब समय पड़ता है तब उसे छोड़े देते हैं, क्योंकि उसके दुर्व्यवहार से मन में सभी अप्रसन्न रहते हैं। अतः जब तक अवधि है तब तक शान्ति के साथ समय बिताना उचित है। इस प्रकार से जब महाराजा युधिष्ठिर भीम को समझा रहे थे ठीक उसी समय दैवात् व्यास जी पहुँच गये, उन्हें देखते ही सभी ने उठकर स्वागत किया तथा आदर के साथ लाकर उच्च आसन पर बैठाया, पश्चात् अपने भी आज्ञा पाकर हाथ जोड़कर सम्मुख बैठ गये।

हे राजन्! संग्राम में उसी की जय होती है जिसके पास सेना तथा अस्त्रादि का विशेष बल है, यह बात परशुराम के साथ युद्ध करने में भीष्म ने उन्हें पराजित करके लोगों को दिखला दी है। और यमराज से भी नहीं डरनेवाले भीष्म तथा कर्ण एवम् प्रलयकालाग्नि के समान युद्ध में भयंकर द्रोणाचार्य आदि योद्धागण सब दुर्योधन के पक्ष में हैं। अतः उन सबों को जिनसे जीत सकें उन दिव्य अस्त्रों को पाने के लिये मैं अर्जुन को एक मन्त्र बतलाता हूँ जिसके द्वारा वे कठिन तपस्या कर इन्द्र भगवान् को प्रसन्न कर दिव्य अस्त्र तथा पराक्रम प्राप्त कर युद्ध में विजयी हों, बस यही मेरे आने का उद्देश्य है, ऐसा कह व्यासजी पुनः अर्जुन से कहने लगे – हे अर्जुन! तुम अब मेरे कथनानुसार साथ में अस्त्रों को भी लिये हुए मुनियों की भाँति जाकर तपस्या करो और जहाँ पर तपस्या करनी है वहाँ पर यह यक्ष तुम्हें शीघ्र ही पहुँचा देगा ऐसा कहकर जैसे ही व्यास जी अन्तर्धान हुए वैसे ही अर्जुन के पास यक्ष उपस्थित हो गया तब उन्हें जाने के लिये उद्यत देख द्रौपदी अर्जुन से कहने लगी–

जबतक तपस्या पूरी न हो तब तक आप हमलोगों के बिना व्यग्र न होना क्योंकि बिना दृढ़ आग्रह के कोई कार्य सिद्ध नहीं होता, और उन्हें तपस्या के लिये उत्तेजित करने के लिये पुनः कहने लगी कि संसार में तेजस्वी पुरूषों की मान–हानि, प्राण–हानि के तुल्य ही होती है, शत्रु से पराजित होने पर उनका अपमान होता है और शत्रुओं ने जो–जो दुर्व्यवहार किये हैं और जिन्हें कि मैं स्मरण भी नहीं करना चाहती, आज मुझे वे ही सब तुम्हारे बिना यद्यपि और भी कष्ट पहुँचायेंगे तथापि उन सबों को इस आशा से सहूँगी कि आप शीघ्र ही शत्रुओं को जीतने योग्य सामर्थ्य प्राप्त कर पुनः मिलेंगे। अतः अब आप तपस्या के लिये जाय और आपके समस्त विघ्नों को इन्द्र भगवान दूर करें, हे नाथ! आप व्यास जी का आदेश पालन करते हुए हमलोगों के मनोरथ को सफल

करें। और अब आपको कृतकार्य देखकर पुनः आनन्द से आलिङ्गन करना चाहती हूँ। तब इन सब बातों को सुनकर अर्जुन को दुर्योधनादिकों के ऊपर अत्यन्त क्रोध हुआ, और वह कवच पहनकर तलवार, धनुष और तरकश लेकर यक्ष के बताये हुये रास्ते से इन्द्रकील पर्वत पर तपस्या करने के लिये चल पड़े, और सब लोगों को उनके जाने पर अत्यन्त दुःख मालूम पड़ने लगा पर समझाकर किसी भाँति अपने–अपने चित्त को शान्त किया, और उस समय मङ्गलसूचक दिव्य दुन्दुभी शब्द तथा आकाश में पुष्प वर्षा होने लगी जिसे देखकर सब अत्यन्त प्रसन्न हुये।

इन्द्रकील पर्वत की ओर यक्ष के साथ जाते हुए अर्जुन ने शरद की शोभा को निम्नलिखित रूप में देखा–

वर्षाऋतु के बीत जाने से मार्ग पर कहीं पङ्क (किचड़) नहीं दिखाई देता था। सद्यः जलविमुक्त नदी तट धवल बालुकामय शरीर को धारण किये हुये था। जलाशयों में अधिक कमल खिलने के कारण दर्शकों को स्थल कमल की भ्रान्ति उत्पन्न होती थी। चारो ओर खेतों में अनेक प्रकार के धान की बालें झूल–झूल कर पथिकों के मन को आकर्षित कर रही थी।

संदर्भ सूची :

1. निपातिसुहृत्स्वामिपितृव्यभ्रातृमातृलम्।
   पाणिनीयमिवाऽऽलोकि धीरैस्तत् समराजिरम्।। –19/75.
2. शब्दार्थौ सत्कविरिय द्वयं विद्वानपेक्षते।–2/86
3. वही पृष्ठ।
4. संशयाय दधतोः सरूपतां दूरभिन्नफलयोः क्रियां प्रति।
   शब्दशासनविदः समासयोर्विग्रहं व्यवससुः स्वरेण ते।। –14/24.
5. पश्वाशत्सु कलौ षट्सु पश्वशतासु च।
   समासु समतीतासु शकानामपि भूभुजाम्।।
6. गतान्पशूनां सहजन्मबन्धुतां गृहाश्रयं प्रेम वनेषु विभ्रतः।
   ददर्श गोपानुपधेनु पाण्डवः कृतानुकरानिव गोभिरार्जवे।।
   आर्जवे विधेयत्वे गोभिः पशुभिः कृतानुकाराननुकृतानिव स्थितानित्युत्प्रेक्षा।
   –वही, 4.13